# द्वितीय सावधिक परीक्षा, 2017

**हिन्दी 'केन्द्रिक'**

**समय – 3 घंटे** **कक्षा – ग्यारहवीं** **पूर्णांक – 100**

**Date – 25.2.2017 (Saturday)**

Name of the student _____ Section _____

**निर्देष – 1. इस प्रष्न पत्र के तीन खंड हैं – क, ख और ग ।**
**2. तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
**3. इस प्रष्न पत्र में कुल 06 पृष्ठ हैं। कृपया जाँच कर लें।**

## खण्ड 'क'

**प्र.1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –**

साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है ? यदि हाँ तो किस मायने में ? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था ? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग निर्माता हो सकता है ? समय बदलता रहा है, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलते हैं, साहित्य बदलता है और इसी के समानांतर पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अतः कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदले जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती, जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है।

यही कारण है कि वर्तमान युग में इंगला–पिंगला, सुषुम्ना, अनहद, नाद आदि पारिभाषिक शब्दावली मन में विशेष भावोत्तेजन नहीं करती। साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है। उसकी श्रेष्ठता का युगयुगीन आधार, वे जीवन मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति है, जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव विकास के लिए पथ–प्रदर्शक का काम करती है।

पुराने साहित्य का केवल वही श्री–सौंदर्य हमारे लिए ग्राह्य होगा, जो नवीन जीवन–मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे अथवा साहित्य रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए, किंतु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब 'स्वांतः सुखाय' काव्य रचना करते हैं, तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंतःकरण में संपूर्ण संसार की सुख–भावना एवं हित–कामना सन्निहित रहती है। जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है।

क) पुराने साहित्य के प्रति पाठक को अरुचि होने का क्या कारण है ? **(2)**

ख) जीवन के विकास में पुराना साहित्य कहाँ तक स्वीकार्य है ? **(1)**

ग) प्रेरणादायक साहित्य का निर्माण किस प्रकार का साहित्यकार कर सकता है ? **(2)**

घ) किसी भी साहित्य के प्रति पाठक का आकर्षण किन बातों पर निर्भर करता है ? **(2)**

ङ) 'श्रेष्ठ' एवं 'निरपेक्ष' शब्दों के विलोम बताइए । **(1)**

च) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताते हुए उसका औचित्य स्पष्ट कीजिए । **(2)**

**प्र.2 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –** **(1×5=5)**

आज सबेरे
जब वसंत आया उपवन में चुपके–चुपके
कानों ही कानों मैंने उससे पूछा,
''मित्र ! पा गए तुम तो अपने यौवन का उल्लास दुबारा
गमक उठे फिर प्राण तुम्हारे,
फूलों–सा मन फिर मुसकाया
पर साथी
क्या दोगे मुझको ?
मेरा यौवन मुझे दुबारा मिल न सकेगा ?''
सरसों की उंगलियाँ हिलाकर संकेतों में वह यों बोला,
मेरे भाई !
व्यर्थ प्रकृति के नियमों की यों दो न दुहाई,
होड़ न बाँधों तुम यों मुझसे ।
जब मेरे जीवन का पहला पहर झुलसता था लपटों में,
तुम बैठे थे बंद उशीर पटों से घिरकर ।
मैं जब वर्षा की बाढ़ों में डूब–डूब कर उतराया था
तुम हँसते थे वाटर–प्रूफ कवच को ओढ़े ।
और शीत के पाले में जब गलकर मेरी देह जम गई ।
तब बिजली के हीटर से
तुम सेंक रहे थे अपना तन–मन
जिसने झेला नहीं, खेल क्या उसने खेला ?
जो कष्टों से भागा, दूर हो गया सहज जीवन के क्रम से,
उसको दे क्या दान प्रकृति की, यह गतिमयता यह नव बेला ।
पीड़ा के माथे पर ही आनंद तिलक चढ़ता आया है
मुझे देखकर आज तुम्हारा मन यदि सचमुच ललचाया है
तो कृत्रिम दीवारें तोड़ो
बाहर जाओ,
खुलो, जलो, भीगो, गल जाओ
आंधी तूफानों को सिर लेना सीखो
जीवन का हर दर्द सहे जो
स्वीकारो हर चोट समय की
जितनी भी हलचल मचनी हो, मच जाने दो
रस–विष दोनों को गहरे में पच जाने दो
तभी तुम्हें भी धरती का आशीष मिलेगा
तभी तुम्हारे प्राणों में भी
यह पलाश का फूल खिलेगा ।

क) कवि ने उपवन से क्या प्रार्थना की ?

ख) मानव को धरती का आशीष कब प्राप्त हो सकता है ?

ग) मानव किस प्रकार प्रकृति के संघर्ष से दूर रहा ?

घ) प्रकृति की गतिमयता एवं नवीनता पाने का अधिकारी कौन हो सकता है ?

ङ) काव्यांश में प्रयुक्त 'पीड़ा के माथे पर ही आनंद तिलक चढ़ता आया है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

## खण्ड 'ख'

**प्र.3 निम्नलिखित में से <u>किसी एक</u> विषय पर निबंध लिखिए –** **(10)**

क) सफलता की कुंजी : मन की एकाग्रता

ख) महिला सशक्तीकरण

ग) छात्र जीवन में अनुशासन का महत्व

घ) मेरे जीवन का लक्ष्य

**प्र.4** आपके क्षेत्र में आवासीय परिसर में औद्योगिक इकाइयों का तेजी से प्रसार हो रहा है जो गैर कानूनी है। इसकी शिकायत करते हुए राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखिए । **(5)**

**अथवा**

दहेज प्रथा के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए ।

**प्र.5 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए –** **(1×5=5)**

क) संचार प्रक्रिया के आवश्यक तत्वों के नाम बताइए ।

ख) डेडलाइन से क्या तात्पर्य है ।

ग) मुद्रित माध्यम की दो कमियाँ लिखिए ।

घ) वॉचडॉग पत्रकारिता किसे कहते हैं ?

ङ) शोर किसे कहते हैं ?

**प्र.6 'चुनावी माहौल'** विषय पर फीचर लिखिए । **(5)**

**अथवा**

हाल में हुए **'नोटबंदी'** से पूरा देश प्रभावित हुआ है । इस पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए एक आलेख लिखिए ।

## खण्ड 'ग'

**प्र.7 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–** **(2×4=8)**

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर
मँगवाओ मुझसे भीख
और कुछ ऐसे करो
कि भूल जाऊँ घर पूरी तरह

झोली फैलाऊँ और न मिले भीख
कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को
तो वह गिर जाए नीचे
और यदि मैं झुकूँ उसे उठाने
तो कोई कुत्ता आ जाए
और उसे झपटकर छीन ले मुझसे ।

क) कवयित्री ईश्वर को क्या कहकर पुकारती है और क्यों ?

ख) ईश्वर से क्या प्रार्थना की गई है ?

ग) कवयित्री अपना घर क्यों भूलना चाहती है ?

घ) काव्यांश में 'कुत्ता' किसका प्रतीक है। इसका प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?

**अथवा**

चंपा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है
उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है–
सब जन पढ़ना–लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने–लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

क) चंपा कवि से क्या प्रश्न करती है ?

ख) कवि चंपा को क्या सीख देता है, और क्या यह सीख उसके भविष्य में सार्थक है ?

ग) चंपा गांधीजी के बारे में क्या सोचती है ? कारण सहित बताइए ।

घ) कवि गांधीजी के विषय में क्या बताता है ?

**प्र.8 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (3×2=6)**

वन, उपवन, गिरि, सानु, कुंज में मेघ बरस पड़ते हैं ।
मेरा आत्म–प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं ।
पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु, गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी ।
लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व–विमोहनहारी ।।

कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल है यह प्रेम–कहानी ।

जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी ।

स्थिर, पवित्र, आनंद–प्रवाहित, सदा शांति सुखकर है ।

अहा ! प्रेम का राज्य परम सुंदर, अतिशय सुंदर है ।।

क) काव्यांश में किस अलंकार का सुंदर प्रयोग है ? विस्तारपूर्वक समझाइए ।

ख) काव्यांश के शिल्प सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए ।

**अथवा**

वह स्वाधीन किसान रहा,

अभिमान भरा आँखों में इसका,

छोड़ उसे मँझधार आज

संसार कगार सदृश बह खिसका !

लहराते वे खेत दृगों में

हुआ बेदखल वह अब जिनसे,

हँसती थी उसके जीवन की

हरियाली जिनके तृन–तृन से !

क) काव्यांश की अलंकार योजना को समझााइए ।

ख) काव्यांश की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए ।

**प्र.9 निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> के उत्तर लिखिए –** **(3×2=6)**

क) 'विस का प्याला राणा भेज्या, पीवत मीरा हाँसी' इसमें क्या व्यंग्य है ? मीरा के पदों के आधार पर बताइए ।

ख) 'आओ मिलकर बचाएँ' कविता के आधार पर आदिवासी समाज की बुराइयाँ बताएँ।

ग) 'घर की याद' कविता के आधार पर पानी के रात भर गिरने और प्राण मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है ?

**प्र.10 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –** **(2×3=6)**

आप भी महसूस करते हैं न ऐसा ? ... तो फिर साथ दीजिए हमारा । अखबार यदि किसी 'इश्यू' को उठा ले और लगातार उस पर चोट करता रहे तो फिर वह थोड़े से लोगों की बात नहीं रह जाती । सबकी बन जाती है .... आँख मूँदकर नहीं रह सकता फिर कोई उससे । आप सोचिए ज़रा अगर इसके खिलाफ कोई नियम बनता है तो (आवेश के मारे जैसे बोला नहीं जा रहा है।) कितने पेरेंट्स को राहत मिलेगी ... कितने बच्चों का भविष्य सुधर जाएगा, उन्हें अपनी मेहनत का फल मिलेगा, माँ–बाप के पैसे का नहीं ..... शिक्षा के नाम पर बचपन से ही उनके दिमाग में यह तो नहीं भरेगा कि पैसा ही सब कुछ है.... वे .... वे ....

क) प्रस्तुत संवाद में वक्ता एवं श्रोता कौन हैं ? वक्ता श्रोता को क्या प्रेरणा देता है ?

ख) किसी मुद्दे को व्यापक बनाने में अखबार की क्या भूमिका होती है ?

ग) इस नियम से बच्चों और उसके माता–पिता को क्या लाभ होगा ?

**अथवा**

मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख ।' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह संदेश देने की कामना है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे बैठे न रहो – खुद कुछ करो । ज़रा देखिए, अच्छे खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं और यहाँ हम बेचैनी से भरे, काम किए जाते हैं । मैं बुखार से छटपटाता–सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त किए रहता हूँ । मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ, जिसमें खामी लगती है । यह बहुत गजब की बात नहीं है, लेकिन मुझमें काम का संकल्प है । भगवद्गीता कहती है, ''जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है ।'' बचपन, जीवन का पहला चरण, एक जागृति है । लेकिन मेरे जीवन का बंबई वाला दौर भी जागृति का चरण ही था ।

क) लेखक सैयद रज़ा युवा मित्रों को क्या संदेश देते हैं ?

ख) लेखक रज़ा ने किन चरणों को जागृति कहा है और क्यों ?

ग) भगवद्गीता का संदेश क्या है ?

**प्र.11 निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन</u> प्रश्नों के उत्तर लिखिए –** **(3×3=9)**

क) शहर जा कर मोहन के जीवन में क्या बदलाव आए ? 'गलता लोहा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

ख) किन–किन कार्यों ने कर्ज़न को एक क्रूर शासक बना दिया ? 'विदाई संभाषण' पाठ के आधार पर बताइए ।

ग) जवाहरलाल नेहरु ने देहात के लोगों को 'हिंदुस्तान' के बारे में क्या बताया ?

घ) 'नमक का दारोगा' कहानी से हमें क्या संदेश मिलता है ?

**प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> प्रश्नों के उत्तर दीजिए –** **(5×2=10)**

क) कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है ? 'राजस्थान की रजत बूँदें' पाठ के आधार पर बताइए ।

ख) 'भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर' पाठ के आधार पर लता के गायन की विशेषताएँ बताइए ।

ग) 'आलो – आंधारि' पाठ के आधार पर तातुश की भूमिका पर आप अपने विचार व्यक्त कीजिए ?

**प्र.13** शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार क्या होना चाहिए ? भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर के आधार पर उत्तर दीजिए । **(5)**

**अथवा**

निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुंइयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। 'राजस्थान की रजत बूंदें' पाठ के आधार पर इस कथन के समर्थन में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

**मौखिक अभिव्यक्ति ।** **(10)**